Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.5 No.17

Impact Factor
Quarterly
Jan-Feb-March 2020

भीष्म साहनी के उपन्यासों में नारी चेतना

डॉ. प्रेमचंद एम.कोराली

प्रस्तावना -

भीष्म जी के उपन्यासो में नारी के चरित्र देख तो नारी परिस्थिति के साथ बह नही जाती, बल्कि परिस्थिति को सामना करके अपने आत्मबल पर जीवन जीने का प्रयास करती है । उपन्यासो में नारी का रूप पत्नी, प्रेमिला, माता, पुत्री, प्रगतिशील नारी, परंपरागत नारी,विद्रोही नारी आदि रूप में दिखाई देती है ।

भीष्मजी के सभी उपन्यासों में नारी पात्र है| समाज में नारी और पुरुष के स्थान हर युग में और हर काल में विभिन्न रूप से निर्धारित होते आए है । प्रायः सभी समाजो में पुरुष की प्रधानता रही है । भले ही कहीं-कहीं अपवाद स्वरुप नारी अब प्रतिक्रिया स्वरुप हर क्षेत्र में पुरुष के बंधन से अपने को मुक्त करने के लिए आगे बढती दिखाई दे रही है । शिक्षा प्राप्त करने की, नौकरी द्वारा आर्थिक स्वावलंबन की ओर बढने की और पुरुष द्वारा बनाये गये क्रूर नियमो के चंगुल से अपने को छुडाने की जो चेतना नारी समूह में संचरित होती रही है उसका प्रतिबिंब साहित्य में भी यत्र तत्र दिखाई पडता है ।

नारी चेतना से आशय है नारी अपनी क्षमताओ को पहचाने और जो लोग नारी पर अत्याचार कर रहे है उनका विरोध करे। एक तरह से यह नारी चेतना है । जब नारी अपनी क्षमताओ को अपनी शक्तियो को पहचानेगी तो जीवन में आगे बढेगी और कई समस्याओ का हल करेगी । नारी देवी का अवतार है, लक्ष्मी का अवतार है, नारी चाहे तो असंभव को संभव कर शकती है ।

नारी चेतना के बारे मे जिसने भी समझा है वह नारी जीवन में आगे बढी है । नारी शाम को घर से बाहर नही निकल पाती क्योकि वह एक तरह से असूरक्षित है लेकिन नारी चेतना को नारी एक बार समझ ले तो उसका भय दूर हो जाएगा । रानी लक्ष्मीबाई जो कि झांसी की राणी थी जिन्होनें अपनी क्षमता और शक्तियो को पहचाना और अंग्रेजो के अत्याचारो के खिलाफ डटकर सामना किया ।

नारी चेतना के कारण साहित्य में भारतीय नारी की नारीवादी दृष्टि का रुप समाज के सम्मुख आया और आज नारी परम्परागत मूल्यो को अस्वीकार कर सभी रुढियों एवं सामाजिक मूल्य निरर्थक मानकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष कर रही है । नारीवादी दृष्टि प्रभाव, भारतीय नारी जीवन, तथा भारतीय समाज पर अत्याधिक पडा । इसके परिणाम भारत में विवाह संबंधी मान्यताओ, धार्मिक मूल्यो, स्त्री-पुरुष संबंधो और आर्थिक जीवन में दिखाई देता है । साहित्य में नारी को नारीवादी दृष्टिकोण सनातनी मान्यताओ और रुढियो के प्रति विद्वोह की भावना तथा नवीन अवधारणाओ को आत्मसात करने की छटपटाहट दिखाई देती है । स्त्री शिक्षा और स्त्री जागरुकता बढने लगी शिक्षा से मानसिकता बदलने लगी । तत्कालीन समाज में नारी विरोधी विचार को बदलने का काम नारी शिक्षा ने किया । शिक्षा से नारी चेतना बढ़ने लगी ।

आधुनिक बोध के उपन्याकारों में अग्रगण्य भीष्म साहनी ने आधुनिक हिन्दी साहित्य को सात महत्वपूर्ण यथार्थवादी उपन्यास दिये । झरोखें, कड़िया, तमस, बसन्ती, मय्यादास की माड़ी, कुंतो, नीलू नीलिमा निलोफर । इसमें भीष्म साहनी ने लगभग एक से स्त्री पात्र रखे है । उनमें विविधता बहुत कम है । उनके अधिकांश स्त्री पात्र पचासवे दशक के रोते झीकते आम भारतीय स्त्री पात्र है । जिनमें परिवर्तन या विद्वोह की सुगबुगाहट तक नही है । समय के साथ बदलाव उनके स्त्री पात्रो में कम ही देखने को मिलते है । स्त्री को उसके समस्त परिवेश, समस्याओ, दमन, प्रताड़ना, मानवीयता और संवेदना के साथ चित्रित करनेवाले भीष्म साहनी के मतानुसार-“ पुरुष के जीवन में नारी का विशिष्ट स्थान है, भले ही पुरुष उसका शोषण क्यो न करे । हमारे सामाजिक जीवन में स्त्री निश्चय ही उत्पीडित है ।”[1] नारी चेतना की दृष्टि से देखे तो भीष्म साहनी अपने उपन्यासों में स्त्री के व्यक्तित्व विकास, स्वातन्त्रय, एकाधिकार, आर्थिक स्वतन्त्रता, स्त्री-शिक्षा, परिवार एवं समाज में स्त्री की सम्मानजनक स्थिति की वकालत करते है। लेकिन फिर भी अधिकांशतः उनके स्त्री पात्र तटस्थ, समझौतावादी और पलायनवादी देखने को मिलते है ।

झरोंखें उपन्यास में हमें नारी गृहिणी, माँ के रूप मे, बच्चो की संरक्षिता और घर की मालकिन, सच्ची भारतीय नारी आदि रूपो में देखने को मिलती है । इस उपन्यास में स्त्री-पुरुष में भेदभाव की तरफ संकेत किया गया है । घर की लड़कियों विधा और विमला को छज्जे पर आने या दरवाजे से बाहर झांकने की अनुमती नही है । उपन्यास स्पष्ट करता है कि एक आर्य समाजी परिवार की स्त्री अनगिनत बन्धनों में कैंद है उसकी कोई सामाजिक भूमिका नही है । माँ का क्षेत्र रसोईघर का है, जो मकान के कही ऊपर है । इस घर में लाल लौ देता हुआ चुल्हा जलता

है । बाहर आले में लैम्प जलता है । यह एक अंधेरा सा कमरा है। यहाँ माँ चट्टी पर बैठकर मक्खन निकालती है । यह रसोईघर माँ की चेतना और कलाप में हरदम मौजुद है । उन पर उसका दबाव रहता है इसलिए वे जीवन भर दोहराती रहती है, कोई बेला बकत देखा करो जी । रसोई का सब काम पडा है... बहनो की ठीक-ठीक कोई जगह मुकर्रर नही, क्योंकि उनके लिए मनाहियाँ-ही-मनाहियाँ है, इसलिए वो घर में एक-साथ घुमती रहती है । उनका साथ होना बताता है कि वो घर की बेटियों के रूप में देखी जाती है, निर्देशीत होती है, डाँट खाती है । बालक देखता है कि यह सफेद से साएँ भाग-भाग कर एक -दूसरे कमरे में जाते रहते है । जीवन की दबाई गई ऊर्जा और गति इसी तरह प्रकट होती है । जोर से हँसने पर उन्हे जोर से डाँट पडती है । उनकी हँसी दबाने पर भी हरदम फुटी पडती है । उन्होंने अपनी हँसी का केन्द्र तुलसी को बना रखा है । अगर हास्य का झरना बहनो की तरफ से फूट पडता है तो जार-जार रूदन की स्मृतियाँ भी इन्हीं से जुडी है । इन दो अंतियो वाला उसका जीवन है ।

परिवार में पुरी तरह से आर्य समाजी की छाया है । मंदिर और गुरुद्वारे पर पिताजी को विश्वास नही है, परन्तु माँ विश्वास रखती है । इसलिए पिताजी के मना करने पर भी उसकी नजर बचाकर मंदिर जाया करती है, बच्चो की नजरे भी उतारती है । इस बात को लेकर कभी कभी पिताजी गुस्से भी हो जाते है पर माँ इसकी ज्यादा परवाह नही करती । माँ का स्वभाव दयालू और आत्मविश्वासु, श्रदालू भी है । जब पिताजी घर के नौकर तुलसी को शौचालय का इस्तेमाल करने से मना करते है तो माँ तुलसी का पक्ष लेकर घर में ही शौचालय जाने को कहती है । वैसे तुलसी को पढाने के बारे में इसका विरोध करती है, गुस्सा करती है परन्तु कभी-कभी तुलसी की चिंता भी बहुत करती है । तुलसी औषधालय चला जाता है तो उसके लिए कपड़े भी भीजवाती है । इस उपन्यास में नारी नैतिकता का विरोध नही करती पर जहाँ जरूरत रहती है तो अपनी आवाज भी उठाती है ।

उपन्यास में तुलसी की पत्नी देवकी में पतिप्रेम भारतीय नारी के रूप में उभरता है वे अपने पति को काम करते देखती है तो दुःखी हो जाती थी । अपने पति से कहती- "वह तो आज आपको सोदा लाने मण्डी भैंजेंगे जी । देख लेना । आप अभी जल्दी से सीढिया उतर जाओ जी नही तो वैद्यजी अभी आ के आवाज लगाऐगे ।"[2] देवकी अपने पति के दुःख में दुःख बाँटना चाहती है । यहाँ भारतीय नारी के गुण उजागर हुआ है ।

भीष्म जी का दूसरा उपन्यास कड़िया का नायक महेन्द्र आधुनिक युगीन पीढी का प्रतिनिधि पात्र है । आधुनिक मानव की परिवर्तित होती जा रही मान्यताओं व प्रवृतियो के कारण मध्यमवर्गीय परिवार के संस्कारो में आ रही दरारो को उपन्यास का कथ्य बनाया गया है । इस उपन्यास में नारी के विभिन्न रूपो का चित्रण मिलता है । कहीं उसका स्वतंत्र रूप से विचरण करनेवाली आत्मनिर्भर रूपी, कहीं पति पर आश्रित रहनेवाली अबला रूप, कही प्रमिला तो कही माँ का रूप । भारतीय समाज में नारी को सामान्य रूप से पुरुष से कमजोर या नीचा समझा जाता है। इसी कारण महेन्द्र अपनी पत्नी को मारता-पीटता है । उसे हर प्रकार की प्रताड़ना देता है । और अंत में घर से बाहर निकाल देता है ।

उपन्यास मे नारी को कामकाजी नारी के रूप में सुषमा का चित्रण किया है जो दूर स्थिर नगर से नोकरी करने आई है । सुषमा स्वार्थरत महेन्द्र के साथ प्रेम बंधन में बंधती है । समाज उसे हिन दृष्टि से देखता है । सतवंत ऐसी स्त्रियो के बारे मे कहती है- "आजकल दफतरो की लड़कियो भी तो इन्हे दम नही लेने देती । बडी तेज है मुईया, हमारे घर बरबाद करने पर तुली हुई है । इतनी बेघडक हो गयी है, खुद मुर्दो का हाथ पकड लेती है ।"[3] इस प्रकार भीष्म जी ने नौकरी पेशा-औरतो की सामाजिक हालात का बडा सटीक चित्रण किया है । भीष्म जी ने नारी को कामवासना के संदर्भ में भी चित्रित करने का प्रयास किया है स्त्री के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण हंमेशा बदलता रहता है । पुरुष भावावेश में नारी को देवी के रुप में मानता है तो कभी अविश्वास की मूर्ति । इस उपन्यास में नाटा स्त्री को केवल कामवासना की पूर्ति का साधन मात्र समझता है उसी के शब्दो में -"सभी औरतो से भोग करते है औरतो बनी ही भोग के लिए है ।"[4] लेकिन महेन्द्र स्त्री को नतो नाटा की तरह देखता है, न फिर अच्छी स्थिति में, बल्कि स्वयं ही उलझा हुआ होने के कारण स्त्री को अविश्वास की नजरों से देखता है । सुषमा के बारे में भी सोचता है कि कही उसका दूसरा लफडा चल रहा हो । अविश्वास ही आधुनिक जीवन का अभिशाप है । जिसके कारण स्त्री पुरुष एक दूसरे के अभिन्न अंग नही बन सकते । सुषमा की स्थिति भी डांवाडोल है । वह पहले महेन्द्र को जाल में फसाती है फिर बूढे वर्माजी को । वर्मा उसे पसंद नही था बल्कि स्वार्थ रत सब कुछ करती है ।

कड़िया उपन्यास में भीष्म जी ने नारी शोषण के विरुद्ध स्वर को बडी दृढता के साथ उकेरा है । शोषण की प्रक्रिया युगो-युगो से चली आ रही है । आज की नारी युगो पुरानी उस नारी से स्वतंत्र भले ही दिखाई दे, चाहे नवीन जीवन मूल्यों अपना ले, आधुनिकता का आवरण ओढले किन्तु उसके प्रति शोषण की पुरानी प्रक्रिया कार्य करती रहती है । उपन्यास की पात्र प्रमिला तो शोषण की शिकार है, उसका पति उसे मारता पीटता है और घर से निकाल देता है । सुषमा भी शोषण से वंचित नही है । पहले महेन्द्र उसे चुसकर फैक देता है , बाद में वर्मा जी उसके साथ रंग-रेलियां मनाते है । भीष्म जी ने भोगवादी को आज के समय मे इस प्रकार उकेरा है- "अब उल्लू के पट्टे, ये बात छिपकर होती है । इश्क नाम की चीज न कभी दूनिया में थी न होगी बडा आशिक बनता है, औरो को भी दुःखी करता है, खुद भी रूसवा होती है । तू जिस औरत से मन आए यारी रख पर घर क्यो तोडता है ? छिपाने का नाम ही सदाचार है .... सभी औरतो के पास जाते है और सभी छिपाते है ।"[5] भीष्म जी ने सतवंत एवं प्रमिला के माध्यम से शोषण का विरोध किया है । प्रमिला कहती है- इस घर पर कहर टूटेगा । तुम अपनी पत्नी को मारते हो । भगवान तुम्हे सजा देगे, तुम अपनी घरवाली को तडपाते हो, भगवान तुम्हे कभी माफ नहीं करेंगें ।... तूम सीधा क्यों नही कहते कि उस दूसरी औरत के साथ रहना चाहते हो ... तुम सच क्यो नही बोलते ? अंदर से कायर हो और बदले मुझ से लेते हो ? तुम शरीफ नही हो, तुम कायर हो ।... शरीफ लोग घरवाली को रुलाते नही । सतवंत भी शोषण का विरोध करती हुई कहती है- मगर पीटना शरीफोवाली बात है ? पराए घर की लडकी को घर मे लाकर पीटो ? औरत चाटे क्यो खाए? किसी का कोई मतलब नही चाँटे मारने का में उसकी (प्रमिला की) जगह होती तो उसका

(महेन्द्र का) मुह तोड़ देती ।"[6] इस प्रकार प्रमिला पर तरस खाकर सतवंत महेन्द्र का विरोध करती है । शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है । भीष्म साहनी ने सुषमा के माध्यम से भी इसका विरोध करवाया है । सुषमा के जीवन में जब वर्मा जी आ जाते है तो वह महेन्द्र को भी खरी-खोटी सुनाती हुई कहती है कि तुम मर्द लोग तो जानवर होते हो, निरे जंगली, माँस के भूखें । इस प्रकार सुषमा को जब पता चलता है कि उसकी वजह से महेन्द्र अपनी पत्नी को प्रताडित करता है तो वह उससे प्रेम करना छोड देती है । यहाँ नारी के प्रति प्रेमभाव दिखाई देता है ।

'तमस' उपन्यास लीजा रीचर्ड से कहती है - "तुम कैसे जीव हो रीचर्ड, ऐसे स्थानो पर भी तुम नये नये पक्षी देख सकते हो, लार्क पक्षी की आवाज सुन सकते हो ?[7] यहाँ लीजा का हदय भावुक हो जाता है । लीजा को रीचर्ड घुमने नही ले जाते तो दारु पीके पडी रहती है । लीजा का शरीर लिजलिजा हो जाता है । कभी-कभी तो बिस्तर में ही उसका पेशाब छूट जाता है । जब होश में आती है तो फिरसे दारु माँगती है । इस प्रकार लीजा में विदेशी संस्कृति का प्रभाव है इसलिए वह शरारती है ।

'तमस'उपन्यास का एक और उद्धरण देखिए राजो पात्र के द्वारा नारी चेतना स्पष्ट होती है| राजो का स्वभाव दयालु है । जब सिक्ख दम्पति अपने घर से निकलकर जाने लगते है तो राजो का दिल बोल उठता है- ''न जाओ जी, रूक जाओं, सांकल चठा दो । तुमने मेरे घर का दरवाजा खटखटाया है, दिल में कोई आस लेकर आए हो । जो होगा देखा जायेगा । तुम लौट आओ ।''[8] राजो की भीतर की मनुष्यता अधिक बलवान है इसलिए वह खतरे को लेकर भी उन्हें अपने घर में शरण देती है ।

बसन्ती का उदात एवं ममतामयी ऐसा संघर्षशील और शक्तिशाली चरित्र प्रदान किया है जो जीवन में भरपूर मौजूदगी के बावजुद साहित्य और कला की दुनिया में प्रायः दुर्लभ नजर आता है । गहरी से गहरी चोट खाने के बाद भी खडी हो जाती है । ऐसा ऐक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"चुप रह, चुप रह, चिल्ला नहीं । नही एक झापड दूँगा, सारे दाँत बाहर आ जाएँगे ।"

"पर बसन्ती आपे से बाहर होती जा रही थी, तू भी हरामी, वह भी हरामी । खबरदार जो मेरे बच्चे को हाथ लगाया । बडा आया बेचने वाला मेरे पेट में अपना बच्चा देकर मुझे बेचने चला, हरामी बेशर्म बदजात । दीनू जब फिर झापड मारने की बात कहकर उसे धमकाता है तो वह गरजती है, "मैं तेरी आँखे खीच लूँगी, तू समझता क्या है ? लगा तो हाथ मुझे ।"[9] इस तरह बसन्ती कभी हारती नहीं । संघर्ष करती है । परिस्थिति का सामना करने में सक्षम हो जाती है ।

'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास में नीलू की माँ घर के पीछले दरवाजे से नीलू को निकाल देती है । घर से भागने में उसकी माँ मदद करती है । वे आकर सुधीर से मिलती है तो सुधीर सिर से पाँव तक सराबोर होता है और कहता है ''मैं तुम्हे खो नही सकता । खोंओगें क्यों जी ? में तो भागी हुई तुम्हारे पास आ गई हूँ । .... कूछ नही होगा .... जो होगा देखा जाएगा"10 । इस तरह नीलू और सुधीर फिर से मिल जाते है । अब नीलू को

अपने पति सुधीर से मिलकर भी उसका संघर्ष थम नही पाता । जब तक नीलू दुसरे बच्चे को जन्म नही दे तब तक दोनों घर और जगह बदलते रहते है ।

निष्कर्षतः भीष्म साहनी के उपन्यासों में नारी चेतना पर विचार किया जाए तो परंपरागत नारी, विविध संबंधो में नारी , पत्नी के रूप में,पुत्री के रूप में, वेश्या के रूप में आदि विविध रूपों में चित्रित हुई है। संघर्षशील नारी, संस्कारशील भारतीय नारी के दर्शन भीष्म साहनी के उपन्यास में होते है। आज़ादी के बाद भी आधुनिकता के प्रभाव के कारण नारी की दासा कैसे बादल जाती है इसका पर्दाफास भीष्मजीने उपन्यास में किया है। नारी परिस्थिति के साथ बह नही जाती ,बल्कि परिस्थिति का सामना करके अपने आत्मबल पर जीवन जीने का प्रयास करती है। भीष्मजी के उपन्यास की नारी अशिक्षा ,वेश्या, अकेलापन, उपेक्षा, आर्थिक विषमता, अन्याय, अंध श्रधा , विदेशी छीजो का आकर्षण , वर्गभेद ,आदि समस्याओं से जुड़ी है। नारी जीवन का एक दर्पण भी मानो भीष्मजी ने अपनी कथा के जरिये प्रस्तुत किया है। अगर समाज की कोई भी नारी उस दर्पण में झांकलेगी तो उसे अपना प्रतिबिंब अवस्य देखने को मिलेंगे। इसमें ही भीष्म जी की सफलता अवलंबित है।

संदर्भ-

1. मेरे साक्षात्कार, भीष्म साहनी,पृष्ठ-38
2. वही, पृष्ठ-91
3. भीष्म साहनी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, डॉ .ज्ञानीदेवी,पृष्ठ-38
4. वही,पृष्ठ-39
5. कड़िया,भीष्म साहनी,पृष्ठ-90
6. कथाकार भीष्म साहनी, डॉ. कृष्णापटेल,पृष्ठ-121
7. तमस, भीष्म साहनी, पृष्ठ-233
8. वही ,पृष्ठ-198
9. बसन्ती, भीष्म साहनी,पृष्ठ-140
10. नीलू नीलिमा निलोफ़र,भीष्म साहनी, पृष्ठ-165

डॉ. प्रेमचंद एम.कोराली

एसोसिएट प्रोफेसर

आणंदआर्ट्सकॉलेज,

आणंद.